

## Your Case Studies

Case Study (approximately 30 minutes including Questions)

The following case study can be read out or described to your group in your own words. These case studies are also available in scripted/play form to be performed by your self and members of the group.

### **CASE STUDY 1: MR AND MRS SHAH- FAMILY TENSION AND HOMELESSNESS**

**Aim: To empower people in the group to take action and live independently if they are unhappy living where they are.**

*Mr. and Mrs. Shah lived in a joint family in India. They dedicated their energies and life to give their son the best education. Mr. Shah and his wife believed that in their old age they would live with their one and only son. Their son migrated to Australia as a skilled migrant and moved to Melbourne with his young family.*

*The parents sold their land and family home in India and got just enough money to get special visas that allowed them to join their son, daughter in law and two grand kids. For Mr. and Mrs. Shah this was a dream come true.*

*Little did they realise that the dream would slowly turn into a nightmare. They had very little money to live on (just \$400/month) and had to rely on their son for most things. Disputes arose and tensions relating to sharing a small two bedroom apartment became unbearable.*

*One day this took a dramatic turn and the parents were asked to leave the son's home at midnight.*

*The Shah family had no knowledge of support services in Melbourne. They came from a country where the Government plays no role in assisting and offering housing solutions. Such problems are resolved by the family or at best the extended family.*

*Mr. and Mrs. Shah had burned their boats back home and had nowhere to go in Australia.*

*By chance they saw an information hand out at the local grocer talking about Home at Last.*

*This became a turning point in their lives. With the help of dedicated social workers they found somewhere affordable to live. Their nightmare had ended.*

*श्रीमान और श्रीमती शाह भारत में एक संयुक्त परिवार में रहते थे। उन्होंने अपने बेटे को संभव सर्वश्रेष्ठ शिक्षा देने के लिए अपनी शक्तियाँ और अपना जीवन अर्पण किया था। श्रीमान शाह और उनकी पत्नी यह सोचते थे कि बुढ़ापे में वे अपने इकलौते पुत्र के साथ रहेंगे। उनके*

बेटे ने स्किल्ड माइग्रेंट (कुशल प्रवासी) के तौर पर ऑस्ट्रेलिया माइग्रेंट किया था और वह अपने साथ अपने युवा परिवार को लाया था।

माँ-बाप ने भारत में अपनी ज़मीन और अपना पारिवारिक घर बेच दिया और ऐसा करके उनके पास पर्याप्त धन इकट्ठा हुआ जिनसे उनको स्पेशल वीज़ा मिला जिसके परिणामस्वरूप वे अपने बेटे, अपनी बहु और अपने दो पोते-पोतियों के साथ रहने योग्य हो सके। श्रीमान और श्रीमती शाह के लिए यह एक स्वप्न के पूरे होने के जैसा था।

उन्होंने यह सोचा भी नहीं होगा कि यह स्वप्न एक भयानक अनुभव में बदल जाएगा। उनके पास रहन-सहन करने के लिए बहुत कम धन-राशि थी (केवल \$400/प्रति महीना) और उनको अधिकतर वस्तुओं के लिए अपने बेटे पर निर्भर रहना पड़ता था। छोटे दो कमरों वाले अपार्टमेंट में एकसाथ रहने के फलस्वरूप झगड़े शुरू हो गए और तनाव असहनीय होने लग पड़ा।

एक दिन इस बात ने नाटकीय मोड़ ले लिया और माता-पिता को आधी रात को अपने बेटे का घर छोड़कर जाने के लिए कहा गया।

शाह परिवार को मेलबोर्न में सहायता सेवाओं के बारे में कोई जानकारी नहीं थी। वे ऐसे देश से आए थे जहाँ सरकार निवास दिलाने या इसमें मदद करने से सम्बन्धित कोई भूमिका अदा नहीं करती है। वहाँ ऐसी समस्याओं का हल परिवार द्वारा या ज्यादा से ज्यादा विस्तृत परिवार द्वारा किया जाता है।

श्रीमान और श्रीमती शाह ने अपने देश लौटने के लिए कुछ भी छोड़ा था और उनके पास ऑस्ट्रेलिया में कहीं दूसरे स्थान पर जाने की कोई जगह नहीं थी।

खुशकिस्मती से उन्होंने स्थानीय किराने की दुकान पर *Home at Last* (होम ऐट लास्ट) के बारे में जानकारी देने वाला एक सूचना-पत्र देखा।

इसने उनकी जिन्दगी बदल दी। समर्पित सामाजिक कार्यकर्ताओं की मदद से उनको रहने के लिए कहीं पर वहन योग्य जगह मिली। उनका भयानक अनुभव समाप्त हो गया था।

#### Key Messages:

- ✓ It can be very stressful when you have to depend on your children for money and other things.
- ✓ If you find yourself with no-where to go, Home at Last can help you.
- ✓ If you want to live in your own house, Home at Last may be able to assist.
- ✓ Home at Last can help you to find a house that is affordable and that you can stay in for your whole life if you wish.

*These key messages will come out in your discussion with the group*

Questions:

1. What issues does the story raise? Have you heard of this happening before in your community?
2. How do you think Mr. and Mrs Shah felt when their son told them to leave the house at Midnight?
3. Do you remember where Mr and Mrs Shah got help?
4. What do you think will happen when the couple move into their new home? How will they feel?

सवाल:

1. कहानी कौन सी समस्याओं को सामने लाती है? क्या आपने अपने समुदाय में ऐसी घटना के घटित होने के बारे में पहले कभी सुना है?
2. आपको क्या लगता है कि जब श्रीमान और श्रीमती शाह के बेटे ने उन्हें आधी रात को घर से निकल जाने के लिए कहा तो उनपर क्या बीती होगी?
3. क्या आपको याद है कि श्रीमान और श्रीमती शाह को मदद कहाँ से मिली थी?
4. आपको क्या लगता है कि जब दम्पति अपने नए घर में चला जाएगा तो स्थिति कैसी होगी? वे कैसा महसूस करेंगे?

The following case study can be read out or described to your group in your own words. These case studies are also available in scripted/play form to be performed by yourself and members of the group.

### **CASE STUDY 3- PARENTS MISTREATED BY THEIR CHILDREN**

**Aim: To let people know that things don't always work the way you hope but there are options available and people to help.**

*A couple well settled, wanted their parents to join them in Melbourne Australia. The Parents knew that their son was in debt and before departing their birth place, they decided to sell their property to help their only son to reduce his debt burden.*

*The son and the family were very happy to see the parents. The grandchildren were especially delighted. After settling down for few days without any hesitation, the father happily gives their money to their son and said "To help you reduce your debt I have sold the property in India. I have never been in debt and how can I see my son in debt".*

*The son was so thankful he sincerely touched his dad's feet and hugged him with tears in his eyes. The whole family had a very enjoyable and relaxed few months together- but then the atmosphere changed and cracks started to appear in the family. Both son and daughter in-law started to argue amongst themselves behind closed doors and then in front of their parents. As the parents tried to interfere, they were told to keep out as it is not their business, yet they were the elders and felt it was their right to interfere to smooth things out.*

*The wife was not happy working all day and coming home to prepare food for the family and told her husband that he should ask his mother to make food in the evening. The son was reluctant to ask. One day mother over heard their argument and offered cook to help to keep peace in the family.*

*The daughter in law did not like the food that mother cooked and complained a lot. Due to their age, the parents were getting very tired doing house chores but did not complain to anyone. The parents could not go out as they didn't have a car and didn't know how to get around. They had no contact with the outside world. Both mum and dad started to get depressed. During a heart to heart conversation they said "we came here to spend quality time with our children but never thought that we would suffer this way, we can't go back to India, we have no friends, what should we do?". Many thoughts were going through their minds. "We are their parents and not the servants, why are our children are treating us this way".*

अच्छे से रहन-सहन करने वाला एक दम्पति चाहता था कि उनके माता-पिता उनके पास मेलबोर्न आकर रहें। माता-पिता को पता था कि उनका बेटा कर्जे में है और अपने जन्मस्थान को छोड़ने से पहले उन्होंने अपनी प्रापर्टी को बेचने का फैसला लिया ताकि वे कर्जे के भार को कम करने में अपने इकलौते बेटे की मदद कर सकें।

बेटे और परिवार को माँ-बाप को देख कर बहुत खुशी हुई। विशेष रूप से पौते-पौतियाँ बहुत खुश थे। कुछ समय तक बिना किसी रोकटोक के रहने के बाद, पिता ने खुशी-खुशी अपने पैसे अपने बेटे को दे दिए और कहा कि, “तुम्हारा कर्जा कम करने में मदद करने के लिए मैंने भारत में अपनी प्रापर्टी बेच दी है। मैं कभी भी कर्जे में नहीं रहा तो फिर मैं तुम्हें कर्जे में कैसे देख सकता हूँ।”

बेटे ने इतना आभारी महसूस किया कि उसने अपने पिता के पैर छुए और उनको गले से लगा लिया और ऐसा करते समय उसकी आँखों में आँसू आ गए। पूरे परिवार ने इकट्ठे मिलकर कुछ महीने हँसी-खुशी और आराम से बिताए, पर फिर इसके बाद माहौल बदल गया और परिवार में दरारें पड़नी शुरू हो गई। बेटा और बहु दोनों बंद दरवाजे के पीछे और फिर अपने माँ-बाप के सामने खुले में लड़ने-झगड़ने लग पड़े। जब माता-पिता ने दखल देने की कोशिश की तो उन्हें यह कहकर चुप रहने के लिए कहा गया कि यह उनका मामला नहीं है, पर वे बड़े-बजुर्ग थे और उनको लगा कि मामले को सुलझाने के लिए दखल देना उनका हक है।

पत्नी इस बात से खुश नहीं थी कि वह पूरा दिन काम करके वापस आती है और फिर उसे परिवार के लिए भोजन बनाना पड़ता है। उसने अपने पति से कहा कि वह अपनी माँ से रात का भोजन बनाने के लिए कहे। बेटा अपनी माँ को ऐसा कहने में अनिच्छुक था। एक दिन माँ ने उनके झगड़े को सुन लिया और परिवार में शांति बनाए रखने के लिए भोजन बनाने में मदद देने की पेशकश की।

बहु को माँ का बनाया भोजन पसंद नहीं आया और वह बहुत शिकायत करती थी। अपनी आयु के कारण, माता-पिता घर का काम करके बहुत थक जाते थे पर उन्होंने किसी से इसकी शिकायत नहीं की। माँ-बाप बाहर घूमने-फिरने नहीं जा सकते थे क्योंकि उनके पास कोई कार नहीं थी और उनको रास्तों की जानकारी नहीं थी। उनका बाहर की दुनिया से कोई संपर्क नहीं था। माता-पिता दोनों उदास रहने लग पड़े। मन की बात करते समय उन्होंने कहा, “हम अपने बच्चों के साथ अच्छा समय बिताने के लिए यहाँ आए थे पर हमने कभी सोचा भी नहीं था कि हमें यह सबकुछ भुगतना पड़ेगा, हम भारत लौट नहीं सकते, हमारे कोई दोस्त नहीं हैं, हमें क्या करना चाहिए?” उनके मन में कई विचार आ रहे थे। “हम इनके माता-पिता हैं कोई नौकर-चाकर नहीं, हमारे बच्चे हमारे साथ ऐसा व्यवहार क्यों कर रहे हैं?”

Key Messages:

- ✓ If you are being mistreated you don't have to put up with it
- ✓ Sometimes making the decision to move out of your family house will improve strained relationships
- ✓ Even if you don't have any savings, there may be options for you to get housing that you can afford
- ✓ Home at Last can help you to find a house that is affordable and that you can stay in for your whole life if you wish.

*These key messages will come out in your discussion with the group*

Questions:

1. What issues does the story raise? Have you heard of this happening before in your community?
2. How do you think the parents feel?
3. What advice would you give the parents if they came to you for help?
4. What services can help the parents?
5. What do you think happens next in the story?

सवाल:

1. कहानी कौन सी समस्याओं को सामने लाती है? क्या आपने अपने समुदाय में ऐसी घटना के घटित होने के बारे में पहले कभी सुना है?
2. आपको क्या लगता है कि माता-पिता पर क्या गुजरी?
3. यदि माता-पिता आपकी मदद करना चाहें तो आप उन्हें क्या सलाह देंगे?
4. कौन सी सेवाएँ माता-पिता की मदद कर सकती हैं?
5. आपको क्या लगता है कि कहानी में आगे क्या हुआ?

**Resolution:**

*One day mum was sick and could not prepare food or clean the house. Seeing her in her bed, the children got very angry but when they realised she was not well, they called the doctor who visited mum at home. Mum and dad were both very happy to see the doctor. The doctor asked them about their life in India and both burst out into tears and told the doctor how unhappy they are here and how they are not allowed to go out or talk to anyone.*

*As the doctor had experienced many similar cases before, he knew exactly what to do. The parents agreed for the doctor to take appropriate action and they*

were referred to Home at Last. Home at Last were able to get the couple somewhere to live in a few months. They kept in touch with their son, but the conflict was no longer there. They now live happily in public housing

**समाधान:**

एक दिन माँ बहुत बीमार थी और वह भोजन नहीं बना सकी और घर की साफ-सफाई भी नहीं कर सकी। उसको बिस्तर पर लेटे देख बच्चों को बहुत गुस्सा आया पर जब उन्हें यह महसूस हुआ कि वह बीमार है तो उन्होंने डॉक्टर को बुलाया जिसने घर आकर माँ के स्वास्थ्य की जाँच की। माता-पिता दोनों डॉक्टर से मिलकर बहुत खुश हुए। डॉक्टर ने उनसे भारत में उनके जीवन बारे पूछा, दोनों रो पड़े और उन्होंने डॉक्टर को बताया कि वे यहाँ कितने अप्रसन्न हैं और उन्हें बाहर जाने और किसी से बातचीत करने नहीं दिया जाता है।

चूँकि डॉक्टर ने पहले ऐसे कई मामले देखे थे, इसलिए उसे पता था कि क्या करने की ज़रूरत है। माता-पिता ने डॉक्टर को उचित कदम उठाने की सहमति दी और उन्हें *Home at Last* (होम ऐट लास्ट) को रेफर किया गया। *Home at Last* ने कुछ महीनों में दम्पति को रहने की जगह ढूँढ कर दी। माता-पिता ने अपने बेटे से संपर्क बनाए रखा, पर अब कोई लड़ाई-झगड़ा नहीं था। वे अब पब्लिक हाउसिंग (सरकारी निवास-स्थान) में खुशी-खुशी रहते थे।

Case Study (approximately 30 minutes including Questions)

The following case study can be read out or described to their group in your own words. These case studies are also available in scripted/play form to be performed by yourself and members of the group.

#### **CASE STUDY 4- MADHU AND GOVIND AVOID HOUSING ISSUES**

**Aim: to provide an example of how people with some assets can avoid becoming financially dependent on their children and avoid homelessness if their living arrangement does not work out.**

*Madhu and Govind are an Indian origin couple who lived in an African country, where they had a good quality of life. Their children acquired university qualifications from other countries as access to university in their own country was limited, particularly for people of Indian origin. One of these children migrated to Australia and settled down in Melbourne.*

*In their late 60's, Madhu and Govind decided to join their son in Melbourne. They wanted to live with their son, but his apartment was too small for all of them- So they offered to pay money towards a bigger house.*

*They put the money from the sale of their son's house and their savings from home together and bought a larger house with a 'granny flat'. They were happy with this decision because it meant they had their own space, a small kitchen and their own bathroom.*

*Madhu didn't just **give** their money to their children as many of their friends did. They asked a lawyer to help them and made sure that their contribution meant that they **owned** part of the house. They made sure they were on the deeds for the house.*

*Madhu and Govind also sat down with their children and made an agreement about- how much they should pay towards the bills, how often they are expected to look after the grandchildren and how often they could use their son's car. They even discussed who would do the cooking and cleaning. This meant that work was divided by everyone and no one felt exhausted by doing all the work.*

*Whilst Madhu and Govind decided to move out after 5 years, they were able to sell the house and use the money they had invested to move into an affordable*



retirement village. They called Home at Last, who provided information and support which helped them to choose the right village for them.

मधु और गोविंद भारतीय मूल के दम्पति एक अफ्रीकी देश में रहते थे, जहाँ वे एक अच्छी जीवन-शैली व्यतीत करते थे। उनके बच्चों ने दूसरे देशों से युनिवर्सिटी की पढ़ाई पूरी की क्योंकि उनके अपने देश में युनिवर्सिटी तक पहुँच सीमित थी, खास करके भारतीय मूल के लोगों के लिए। उनकी एक संतान ने ऑस्ट्रेलिया में माइग्रेट (आप्रवास) किया और वह मेलबोर्न में बस गई।

60 से अधिक की आयु वाले मधु और गोविंद ने मेलबोर्न में अपने बेटे के साथ जाकर रहने का फैसला लिया। वे अपने बेटे के साथ रहना चाहते थे, पर सब लोगों के लिए उसका अपार्टमेंट बहुत छोटा था। इसलिए उन्होंने एक बड़ा घर खरीदने के लिए धन-राशि का योगदान देने की पेशकश की।

उन्होंने अपने बेटे का घर बेचकर मिली धन-राशि और अपने देश से इकट्ठी की अपनी बचत को साथ जोड़कर एक बड़ा घर खरीदा जिसमें 'ग्रैनी फ्लेट' साथ जुड़ा हुआ था। वे अपने फैसले से खुश थे क्योंकि इससे उनके पास अपनी निजी जगह थी, अपनी छोटी सी रसोई और अपना बाँथरूम था।

मधु ने अपने अपने मित्रों के जैसे बच्चों को केवल धन-राशि ही नहीं दी। उन्होंने एक वकील को उनकी सहायता करने के लिए कहा और यह सुनिश्चित किया कि उनकी धन-राशि के योगदान का अर्थ था कि वे घर के एक हिस्से के **मालिक** थे। उन्होंने यह सुनिश्चित बनाया कि घर के कागजों में उनका नाम शामिल था।

मधु और गोविंद ने अपने बच्चों के साथ बैठकर इस बारे में एक समझौता किया कि उनको विलों का भुगतान करने के लिए कितना योगदान देना होगा, उनसे कितनी बार पोते-पोतियों की देखरेख करने की उम्मीद की जाती है और वे कितनी बार अपने बेटे की कार का प्रयोग कर सकते हैं। उन्होंने इसपर भी चर्चा की कि भोजन बनाने और साफ-सफाई करने का काम कौन करेगा। इसका अर्थ यह हुआ कि काम हर किसी में बँटे और किसी एक व्यक्ति ने सारा काम करने के कारण थका-मँदा महसूस नहीं किया।

हालाँकि मधु और गोविंद ने 5 साल बाद वहाँ से जाने का फैसला लिया, पर वे अपना घर बेच पाए और निवेश की गई अपनी धन-राशि को वहन योग्य रिटायरमेंट विलेज में घर लेने हेतु प्रयोग कर पाए। उन्होंने Home at Last को फोन किया, जिन्होंने सूचना और मदद प्रदान की जिसके कारण उन्हें अपने लिए सही विलेज चुनने में मदद मिली।

### Key Messages:

- ✓ Discussion and expression of your expectations may save you from disappointments later on.
- ✓ When you give money to your family it is hard to get it back. If you are buying a house or granny flat with your family, make sure you put it in writing, in case you need the money later on.
- ✓ Family agreements can help you to avoid conflict down the track.
- ✓ Home at Last can provide advice and guidance about retirement housing options

*These key messages will come out in your discussion with the group*

### Questions:

1. What did Madhu and Govind do differently to the other case study?
2. How would discussing things like house-work and cooking affect their future living together?
3. How would things be different if they just gave the children their money (instead of being legally recognised as part owners of the house)?
4. Where would they go for advice if they wanted to move into retirement housing, but only had a small amount of money?

### सवाल:

1. मधु और गोविंद ने दूसरी केस स्टडी से क्या अलग किया?
2. घर के काम और भोजन बनाने के काम पर चर्चा करने से भविष्य में उनके एकसाथ रहने पर क्या प्रभाव पड़ेगा?
3. यदि वे अपने बच्चों को सिर्फ धन-राशि देते हैं (घर के आंशिक मालिक के तौर पर कानूनी रूप से स्वीकार किए जाने की बजाए), तो क्या-क्या अलग घटित होगा?
4. यदि उनके पास बहुत कम धन-राशि हो और वे रिटायरमेंट हाउसिंग में जाना चाहते हों, तो वे किससे सलाह ले सकते हैं?